अर्पिता अग्रवाल

मैं संजीवनी हूं

मानव प्रकृति को अपने तरीके से चलाना चाह रहा था। प्रकृति एक सीमा तक सहती रही और फिर प्रकृति ने अपना रौद्र रूप दिखाना शुरू किया। पृथ्वी के बढ़ते तापमान ने दुनिया में प्रलय के संकेत दे दिए थे। अब मानव असहाय विनाश का तांडव देख रहा था। नाभिकीय हथियारों को जमा कर विश्व विजय का सपना देखने वाला मानव दिखाई ना देने वाले सूक्ष्मजीवों के हाथों चारों खाने चित पड़ा था। जल देवता क्रोधित होकर जल प्रलय लाने लगे। अग्नि विकराल रूप धारण करने लगी। वन जलने लगे। सूर्य से हानिकारक किरणें निकल कर पृथ्वी तक पहुंचने लगीं। वायु विषैली हो गई। मानव मुंह को कपड़े से ढकने लगा। आकाश में उपग्रहों के जंगल ने अंतरिक्ष में हलचल पैदा कर उसे उद्वेलित कर दियां विकिरण की बढ़ती मात्रा ने मानव का स्वभाव परिवर्तित कर दिया। ना सिर्फ मानव, पशु-पक्षियों के व्यवहार में भी परिवर्तन होने लगे। जीव-जगत हिंसक हो रहा था और पादप-जगत छटपटा कर दम तोड़ रहा था।

मेरी पत्तियों से निरंतर आंसू बह रहे थे। मेरे सभी पौधों का यही हाल था। हमारे पसंद के कीट मृत होकर धरा पर पड़े थे। हमारे परागण में सहायक तितलियां हमारी आंखों के सामने छटपटा रही थी। भीषण गर्मी से मेरी पत्तियां मुरझा रही थी। भूमि में पानी की कमी के चलते मेरी जड़ें पत्तियों तक पानी नहीं पहुंचा पा रही थी और अपने आखिरी आंसू के साथ प्रत्येक पत्ती धीरे-धीरे मेरा साथ छोड़ रही थी। गर्मी से बेहाल होकर करोड़ों पादप व जीव-जंतुओं की जातियां विलुप्ति हो रही थी और उन्हीं के साथ मैं संजीवनी भी विलुप्ति की कगार पर पहुंच गई। मैं ठूंठ बन कर रह गई। कुछ दिन बीत गए, मैंने सोचा था शायद फिर से वर्षा होगी, गर्मी कम होगी और मेरी पत्तियां फिर से फूट पड़ेंगी लेकिन लगता था अब मैं नहीं बच पाऊंगी। मैंने वह सुनहरा काल देखा था जब मैंने अनेक जीवन बचाए थे। लेकिन आज मैं अपना स्वयं का जीवन भी ना बचा पाई।

रामायण में प्रसंग है कि जब रावण की सेना से युद्ध करते समय लक्ष्मण जी मूर्छित हो गए थे, तब श्री हनुमान जी संजीवनी लेने हिमालय पर गए थे। वैद्य सुषेण ने संजीवनी की पहचान बताई थी कि वह बूटी रात को चमकती है। हनुमान जी को उस पर्वत पर अनेक चमकने वाले पौधे दिखे, उन्हें समझ में न आया कि किसे संजीवनी समझ कर ले जाएं। तब उन्होंने पूरा पर्वत ही उठा लिया और युद्ध स्थल पर वैद्य सुषेण जी के पास ले जाकर रख दिया और कहा कि आप स्वयं संजीवनी बूटी को पहचान लें। वैद्य सुषेण ने संजीवनी बूटी से लक्ष्मण जी की मूर्छा दूर कर दी। संजीवनी की पहचान करने वाले अनुभवी वैद्यों की मदद से प्राचीन काल में भारतीय राजाओं ने अनेक युद्ध जीते, क्योंकि युद्ध में घायल सैनिकों को संजीवनी एक रात में ठीक कर देती थी।

धीरे-धीरे मानव की गतिविधियां प्रकृति के विरोध में होने लगी और पंच तत्व (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश) की पवित्रता नष्ट होने लगी। पृथ्वी क्षमाशील है अतः मानव को क्षमा करती रही।

मानव प्रकृति को अपने तरीके से चलाना चाह रहा था। प्रकृति एक सीमा तक सहती रही और फिर प्रकृति ने अपना रौद्र रूप दिखाना शुरू किया। पृथ्वी के बढ़ते तापमान ने दुनिया में प्रलय के संकेत दे दिए थे। अब मानव असहाय विनाश का तांडव देख रहा था। नाभिकीय हथियारों को जमा कर विश्व विजय का सपना देखने वाला मानव दिखाई ना देने वाले सूक्ष्मजीवों के हाथों चारों खाने चित पड़ा था। जल देवता क्रोधित होकर जल प्रलय लाने लगे। अग्नि विकराल रूप धारण करने लगी। वन जलने लगे। सूर्य से हानिकारक किरणें निकल कर पृथ्वी तक पहुंचने लगीं। वायु विषैली हो गई। मानव मुंह को कपड़े से ढकने लगा। आकाश में उपग्रहों के जंगल ने अंतरिक्ष में हलचल पैदा कर उसे उद्वेलित कर दियां विकिरण की बढ़ती मात्रा ने मानव का स्वभाव परिवर्तित कर दिया। ना सिर्फ मानव, पशु-पक्षियों के व्यवहार में भी परिवर्तन होने लगे। जीव-जगत हिंसक हो रहा था और पादप-जगत छटपटा कर दम तोड़ रहा था।

घरों में बंद रहने वाले मानव ने खिड़की, दरवाजों, रोशनदानों को भी बंद कर लिया। उसका अधिकांश समय घर के भीतर बीतता और वहीं से वह अपने सभी कार्य करता था। गौरैया, बया आदि अनेक चिड़ियां अत्यंत कम हो गईं। एक तितली की प्रजाति जिससे प्रकाश निकलता था और जो मेरे फूलों का परागण करती थी वह विलुप्त हो गई। मेरे पौधों की संख्या बढ़नी बंद हो गई।

मानव ने भोजपत्र के जंगल उजाड़ दिए।

मानव ने भोजपत्र के जंगल उजाड़ दिए। उपयोगी वृक्षों जैसे आम, नीम, जामुन जो पहले हर घर के बाहर या हर मोहल्ले के अंदर होते थे, उन्हें काटकर बहु मंजिला इमारत बना ली गई। घरों में सजावटी वृक्ष लगाने आरंभ हो गए। फलों की कमी होने लगी। पारिस्थितिकी तंत्र के सुधार में कोई योगदान न करने वाले बंदरों की संख्या बढ़ रही थी और उनके खाने के लिए जंगलों में फलों के पेड़ कम पड़ रहे थे उन्होंने मानव के आबादी वाले क्षेत्रों में घुसना आरंभ किया और कई लोगों को घायल कर दिया। घटते जंगलों के दुष्परिणाम सामने आने लगे थे। पक्षी वृक्ष पर लगे फलों को खाकर अपने पेट भरते थे। उनके भोजन का संकट उत्पन्न हो गया। लोग कहते थे जिस फल में तोता चोंच मारता है वह बहुत मीठा होता है। पर अब ऐसा नहीं होता था क्योंकि अनेक बाग उजाड़ कर मानव ने अपने घर बना लिए थे। वृक्षों से मिलने वाले प्राकृतिक रंग के स्थान पर कृत्रिम रंग का इस्तेमाल सेहत और पृथ्वी को प्रदूषित कर रहा था। एक बड़ा अत्यंत मासूम पक्षी डोडो था। डोडो शांति से एक सुनसान द्वीप में रहता था। जिस कारण उसने अपने बचाव के कोई उपाय नहीं सीखे थे क्योंकि उस जगह उसे किसी से कोई खतरा नहीं था, लेकिन सबसे खतरनाक जीव 'मानव' ने जब उस द्वीप पर पदार्पण किया तो डोडो की आबादी घटने लगी। डोडो को मानव ने अपने जिह्वा के स्वाद के लिए मारकर खाना शुरू कर दिया। मानव के पालतू कुत्ते भी उन्हें खाने लगे और कुत्तों ने डोडो के अंडे भी खा डाले और एक सदी में ही डोडो विलुप्त हो गया। डोडो अकेला ही विलुप्त नहीं हुआ उसके साथ कालबेरिया मेजर नामक वृक्ष भी विलुप्त हो गया। क्योंकि उसके बीज डोडो के पेट में जाने के बाद नरम होते थे, जो पेट से बाहर निकल कर ही अंकुरित होकर वृक्ष में बदलते थे।

मानव की विलासिता पूर्ण जीवन शैली की चाह ने अनेक कीट-पतंगों, तितलियों, जीव-जंतुओं को विलुप्त कर दिया। किसी का आवास छीन लिया, किसी का आहार छीन लिया। गजराज जैसे ताकतवर पशु को हाथी दांत के लिए मार डाला। चंदन की लकड़ी की अत्यधिक कीमत के चलते चंदन के पेड़ काट डाले। वन नष्ट कर आवास व खेत बना डाले। खनिजों के दोहन के चलते पहाड़ियां नष्ट कर दी। अब आवास और भोजन की खोज में जंगली जंतु गांव की ओर आने लगे तो उन्हें खाने की वस्तुओं में पटाखे छुपाकर दे दिये, जिसे खाकर जानवर दर्दनाक मौत मर गए। मगरमच्छ जैसे जीवों को खाल के लिए मारा। ऐसे ही अनेक जीव-जंतु धीरे-धीरे विलुप्त होते गए और कोई शोर नहीं मचा। कई जीव अंधाधुंध शिकार के चलते विलुप्त हो गए। नदियों से रेत का अत्यधिक दोहन कर उसका पारिस्थितिकी तंत्र बिगाड़ डाला। प्रत्येक वर्ष मानसून में नदियों में बाढ़ आने पर आस-पास के खेतों में पानी भर जाता था, जो सूखने पर खेतों को रेत से भर देता था। उस रेत को निकालने की अनुमति प्रशासन देता था लेकिन धन लोलुप मानव का मन कहां भरता, इस आड़ में उसने नदियों को छलनी कर दिया। कुओं को पाटकर, तालाबों को गंदगी डालने का स्थान बनाकर नष्ट कर दिया। नदियों में जहरीला कचरा डालकर, नदियों को विषैला करके, मानव अपने सुखों में व्यस्त था। मानव ने समुद्र के निकट आवास बनाकर वहां के पेड़-पौधों, मैंग्रोव वनों को नुकसान पहुंचाया।

अब मानव का अधिकांश समय एयर कंडीशन गाड़ी, एयर कंडीशन घर और एयर कंडीशन दफ्तर में ही बीतता था। पानी को मुफ्त में उपलब्ध जानकर उसने पीने के पानी को बर्बाद किया और मन ही मन मुस्कुरा कर बोला भूमि के नीचे तो ढेरों मुफ्त पानी है उसे बोरिंग कर निकाल कर इस्तेमाल करेंगे। इसी मानसिकता ने भूगर्भ जल भंडार खाली कर दिए। बोरिंग की गहराई दिनों दिन बढ़ती गई। इतनी गहराई से अशुद्ध पानी निकलने लगा तो वॉटर प्यूरीफायर, आर.ओ. लगवा लिए। लेकिन पानी रूपी अमृत को बचाने के बारे में नहीं सोचा और फिर धीरे-धीरे मिट्टी की ऊपरी परत नष्ट हो गई और रेगिस्तान फैलने लगा। राजस्थान व गुजरात का रेगिस्तान मध्य भारत तक फैल गया। पीने के पानी की भयंकर कमी हो गई। लोगों को एक दिन छोड़कर एक दिन पानी मिलता था वह भी पीने के लिए ही पर्याप्त होता था, बाकी कार्यों के लिए क्या करें। अब लोग दूर-दूर से गगरी भर कर पानी लाने लगे। जब तक हम प्रकृति द्वारा प्रदान की हुई वस्तुओं का सम्मान नहीं करेंगे हमें देर-सवेर प्रकृति के कोप का भागी बनना पड़ेगा। ऐसा लगने लगा मानो मानव सदियों पीछे चला गया हो।

यही तो चक्र है प्रकृति और नियति का, कि जहां से चले थे वहीं वापिस पहुंच गए। क्योंकि दुनिया गोल है इसलिए जहां से चलेंगे वापस उसी जगह पहुंच जाएंगे।

मानव की विलासिता पूर्ण जीवन शैली की चाह ने अनेक कीट-पतंगों, तितलियों, जीव-जंतुओं को विलुप्त कर दिया। किसी का आवास छीन लिया, किसी का आहार छीन लिया। गजराज जैसे ताकतवर पशु को हाथी दांत के लिए मार डाला। चंदन की लकड़ी की अत्यधिक कीमत के चलते चंदन के पेड़ काट डाले। वन नष्ट कर आवास व खेत बना डाले। खनिजों के दोहन के चलते पहाड़ियां नष्ट कर दी। अब आवास और भोजन की खोज में जंगली जंतु गांव की ओर आने लगे तो उन्हें खाने की वस्तुओं में पटाखे छुपाकर दे दिये, जिसे खाकर जानवर दर्दनाक मौत मर गए। मगरमच्छ जैसे जीवों को खाल के लिए मारा। ऐसे ही अनेक जीव-जंतु धीरे-धीरे विलुप्त होते गए और कोई शोर नहीं मचा। कई जीव अंधाधुंध शिकार के चलते विलुप्त हो गए।

मैं सोच रही थी शायद मेरा कोई बीज पृथ्वी माता ने सहेज कर रखा हो और मुझे पुनः अपनी धरती पर उगने का अवसर मिल जाए। शायद मैं मानव की सेवा कर उसे नवजीवन दे पाऊं। मैं ठूंठ बनी, वर्षा के लिए तरसती हुई, नवजीवन के सपने देख रही थी, परन्तु हाय! लकड़ी की खोज में आए कुछ मानवों ने मुझे लकड़ी समझकर उखाड़ दिया। मेरे सभी पौधे इसी अंत को प्राप्त हुए। मानव नहीं जानता था कि उसने कैसी अमूल्य निधि खो दी थी।

सपंर्क करें:
डॉ. अर्पिता अग्रवाल
120-बी/2, काकली भवन
मेरठ-250 003